शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ४८ : नई दिल्ली : ३-९ मार्च २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी मर्यादा महोत्सव की सानंद संपन्नता के बाद भुज-कच्छ (गुजरात) की ओर विहार कर रहे हैं। धर्मप्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। आसपास और सुदूर क्षेत्रों के काफी लोग अहिंसा यात्रा के साथ पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में हैं। प्रातः प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग पूज्यप्रवर के दर्शन एवं उपासना हेतु पहुंच रहे हैं।

टापरा प्रवास के अवशेष कार्यक्रम

१३ फरवरी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी एवं साध्वी सरस्वतीजी ने दिवंगत साध्वी विनयवतीजी के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त किए। पंजाब से चतुर्मास संपन्न कर गुरुदर्शन करने वाले मुनि रमेशकुमारजी व मुनि चैतन्यकुमारजी, लाडनूं से समागत शासनगौरव मुनि धनंजयकुमारजी के सहवर्ती मुनि अक्षयप्रकाशजी, लगभग एक वर्ष के बाद दर्शन करने वाले समण सिद्धप्रज्ञजी ने वक्तव्य एवं गीत के माध्यम से गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। साध्वी संगीतप्रभाजी एवं बहिर्विहारी नवदीक्षित साध्वियों ने भावपूर्ण गीत के द्वारा पूज्यवर की अभ्यर्थना की। मुनि रणजीतकुमारजी के सहवर्ती मुनि मेरुकुमारजी ने आज दर्शन किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में निर्धारित विषय 'धम्मं सरणं गच्छामि' पर विशेष विवेचन करते हुए धर्म के तीन आयामों--अहिंसा, संयम और तप को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की।

प्रसंगवश आचार्यवर ने कहा--'साध्वी संगीतप्रभा प्रतिभाशाली अच्छी साध्वी है। गुरुकुलवास में उन्होंने जो पाया है, बहिर्विहार में उसका अच्छा उपयोग करना है। सभी साध्वियां जहां भी रहें, अच्छी साधना करें तथा धर्मसंघ की प्रभावना करती हुई अपना अच्छा विकास करें। आज चार संत आए हैं। मुनि रमेशकुमारजी अच्छी सेवाभावना वाले संत प्रतीत हुए। इनमें संघीय भावना, संघीय निष्ठा व गुरुनिष्ठा का भी अच्छा क्रम देखा। मुनि चैतन्यकुमारजी भी अच्छे भले संत हैं। इन्होंने लंबी यात्राएं की हैं। मुनि अक्षयप्रकाशजी प्रतिभाशाली संत हैं। सापेक्ष अर्थशास्त्र के विषय में इनका अच्छा अभ्यास चल रहा है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी की ये अच्छी सेवा करते थे। अभी पी.एच.डी. कर रहे हैं। मुनि मेरुकुमारजी मालवा से अकेले आए हैं। सभी संत अच्छी साधना, अच्छा विकास और अच्छा कार्य करें। समण सिद्धप्रज्ञजी अकेले समण हैं। इन्हें जीवनविज्ञान और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराने का अच्छा अभ्यास है। समय-समय पर संतों की अच्छी सेवा भी की है। ये भी खूब अच्छी साधना और कार्य करते रहें।'

कार्यक्रम में प्रवचन के उपरान्त जिज्ञासा-समाधान का क्रम रहा। तेरापंथी महासभा द्वारा प्रकाशित संबोधन-अलंकरण प्राप्तकर्ता परिचय पुस्तिका अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया, उपाध्यक्ष श्री विमल सुराणा, सहमंत्री श्री बजरंग सेठिया ने पूज्यवर को भेंट की। आज मध्याह्न में साधु-साध्वियों की बृहत् संगोष्ठी समायोजित हुई, जिसमें परमपूज्य आचार्यवर ने साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। रात्रि में काव्य संध्या का समायोजन हुआ, जिसमें मुनिवृन्द ने रोचक प्रस्तुतियां दीं।

नवीन कृति 'विजयी बनो' एवं 'महाप्रज्ञ ने कहा-४५' का लोकार्पण

१४ फरवरी। प्रातःकालीन प्रवचन से पूर्व सूरत (सिटीलाइट) से चतुर्मास संपन्न कर गुरु सन्निधि में

पहुंच मुनि सुरेशकुमारजी व उनके सहवर्ती मुनि संबोधकुमारजी, उधना-सूरत में चतुर्मास करने वाले मुनि भूपेन्द्रकुमारजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता व उत्तराध्ययन पर आधारित पूज्यप्रवर की नवीन कृति 'विजयी बनो' तथा संवत् २०७० का जय तिथि पत्रक तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ ने पूज्यप्रवर को भेंट किया। श्री सुरेन्द्र बोरड़ ने प्रवचनमाला के अन्तर्गत आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित 'महाप्रज्ञ ने कहा-४५' पूज्यवर के करकमलों में अर्पित की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने 'चएज्ज देहं न हु धम्म सासणं' विषय पर अपने मंगल प्रवचन में धर्मशासन के प्रति निष्ठावान बने रहने का संबोध प्रदान किया। उपहृत की गई पुस्तकों के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने लाडनूं में मुझे फरमाया कि आचार्य तुलसी ने मुझे (आचार्य महाप्रज्ञ को) फरमाया था कि महाप्रज्ञजी, तुम्हें भगवद्‌गीता पर कार्य करना है, कुछ लिखना है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मुझसे कहा कि वह कार्य मैं नहीं कर पाया हूं। वह अब तुम्हें (आचार्य महाश्रमण को) करना है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के इंगितानुसार मैंने भगवद्‌गीता और उत्तराध्ययन पर काफी वक्तव्य दिए। उन वक्तव्यों के आधार पर तीन ग्रंथ तैयार हो गए--सुखी बनो, संपन्न बनो और विजयी बनो। आज 'विजयी बनो' का लोकार्पण हुआ है। उन वक्तव्यों को संपादित करने में साध्वी सुमतिप्रभा ने श्रम किया है। इस विषय में वह काफी कार्य करती है। उसने इस संपादन कार्य को मानो अपना मिशन, विजन और लक्ष्य बना लिया है। इस कार्य के प्रति इसमें कोई धुन जाग गई है। यह अपने आप में महत्त्वपूर्ण बात है। इसके लिए साध्वी सुमतिप्रभा साधुवाद की पात्र है। मुझे भी आत्मतोष है कि गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने जो निर्देश सन् २००९ में मुझे दिया था, उसे यथासंभव मैंने पूरा करने का प्रयास किया और उसकी साक्षी के रूप में ये तीन ग्रंथ हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी का यह एक अवशिष्ट कार्य मेरे द्वारा पूरा हो सका, इसका मुझे सात्त्विक आत्मतोष है।

महाप्रज्ञ ने कहा प्रवचनमाला का ४५वां भाग सामने आया। आचार्य महाप्रज्ञ ऐसे मनीषी पुरुषरत्न थे, जिनकी वात्सल्यमयी छत्रछाया हम सबको प्राप्त हुई। उनके प्रवचन-सागर के मंथन से नवनीतस्वरूप कितना-कितना साहित्य अब तक आया है और आ रहा है। प्रवचनमाला के इन पुष्पों का संपादन मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी और मुनि जयकुमारजी ने किया है। इसके संकलन-संपादन में जिनका भी श्रम लगा है, वे साधुवाद के पात्र हैं।

प्रसंगवश पूज्यवर ने कहा--'मुनिश्री सुरेशकुमारजी स्वामी संस्कारी संत हैं। शासन के प्रति अहोभाव रखने वाले हैं। इनके सहवर्ती मुनि संबोधकुमारजी अच्छा वक्तव्य देने लग गए। गुरुभक्ति की भावना रखने वाले संत प्रतीत हुए। मुनि हितेन्द्रजी बालमुनि हैं। इनमें सेवा के संस्कार पुष्ट होते रहें। मुनि भूपेन्द्रकुमारजी तपस्वी संत हैं। इन्होंने तेरह वर्षीतप कर लिए। इनमें सेवा की अच्छी भावना है। इनकी सेवानिष्ठा बनी रहे। सभी संत अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए खूब अच्छी साधना और कार्य करते रहें।'

आज मध्याह्न में दीक्षार्थिनी बहनों की शोभायात्रा का उपक्रम रहा। रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था द्वारा दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ।

संबोधन-अलंकरण समारोह

१४ फरवरी। आज मध्याह्न में परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संबोधन-अलंकरण समारोह समायोजित हुआ। परमपूज्य आचार्यवर द्वारा सन् २०१२ में शासनसेवी, तपोनिष्ठ, महादानी, श्रद्धानिष्ठ, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, कल्याणमित्र संबोधन से संबोधित २५१ श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू तथा महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया के अभिभाषण हुए। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति में साध्वीवृन्द द्वारा रचित व चयनित गीतों की सीडी 'महाप्राण महाप्रज्ञ' श्री बाबूलाल कच्छारा एवं श्री सलिल लोढ़ा ने लोकार्पित की। प्रस्तुत सीडी के गीतों को मीनाक्षी भुतोड़िया ने स्वर दिया है। कार्यक्रम का संचालन श्री विमल बैद (कोलकाता) ने किया।

इस अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'अलंकरण-संबोधन का यह औपचारिक प्रदान सम्मान समारोह संपन्न हो रहा है। जिन्हें संबोधन प्राप्त होता है, उनको और उनके परिवार के मन में अहोभाव भी देखने को मिलता है। जिन्हें संबोधन प्राप्त हुआ है, वे सभी धार्मिक साधना-आराधना में खूब आगे बढ़ते रहें और आत्मकल्याण की दिशा में खूब विकास करें।'

पुरस्कार-सम्मान समारोह

१५ फरवरी। आज रात्रि में परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में पुरस्कार-सम्मान समारोह की आयोजना हुई। इसमें तेरापंथी महासभा द्वारा 'श्रीमती मनोहरीदेवी डागा समाजसेवा पुरस्कार' पीपली निवासी, चेन्नई प्रवासी श्री घीसूलाल बोहरा को प्रदान किया गया। महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया, प्रधान न्यासी श्री कमलकुमार दूगड़ ने स्मृतिचिह्न, प्रशस्तिपत्र तथा पुरस्कार राशि का चैक श्री बोहरा को प्रदान किया, तत्पश्चात् महासभा द्वारा श्रेष्ठ सभा के रूप में सूरत तथा विशिष्ट सभा के रूप में सूरत और गदग सभा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला से संबद्ध अनेक पुरस्कार भी प्रदान किए गए। मुनि उदितकुमारजी, महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू तथा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने ज्ञानशाला के संदर्भ में विचाराभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर अ.भा.तेयुप द्वारा श्री कमलकुमार दूगड़ (कोलकाता) को 'युवा गौरव' अलंकरण से अलंकृत किया गया। अभातेयुप के उपाध्यक्ष श्री बी.सी.भलावत द्वारा प्रशस्तिपत्र के वाचन के पश्चात् अध्यक्ष श्री संजय खटेड़, महामंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला आदि ने प्रशस्तिपत्र और स्मृतिचिह्न श्री दूगड़ को प्रदान किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा और अभातेयुप द्वारा सम्मान का उपक्रम चला। सम्मान की प्राप्ति सुखद अनुभूति प्रदान करने वाली बन सकती है। यदि इसके साथ दायित्व की अनुभूति जुड़ जाए तो सम्मान की सार्थकता और बढ़ जाती है। सम्मान प्राप्तकर्ता सम्मान की गरिमा को बनाए रखने का प्रयास करें और अपने जीवन में आध्यात्मिक विकास करते रहें।

कार्यक्रम का संयोजन महासभा के उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद तथा सहमंत्री श्री बजरंग सेठिया ने किया।

शासन है कल्पतरू

१६ फरवरी। १४९वें मर्यादा महोत्सव का दूसरा दिन। साध्वी संकल्पश्रीजी, साध्वी केवलयशाजी, साध्वी हेमरेखाजी, साध्वी पुनीतप्रभाजी, साध्वी सौम्ययशाजी, शासनश्री साध्वी यशोधराजी, साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी भव्ययशाजी, समणी विपुलप्रज्ञाजी, समणी भास्करप्रज्ञाजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, समणी निर्वाणप्रज्ञाजी, मुनि प्रतीककुमारजी, मुनि सिद्धकुमारजी, मुनि धवलकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी, मुनि शुभंकरकुमारजी, मुनि अतुलकुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि विजयकुमारजी, मुनि दर्शनकुमारजी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्कप्रमुख श्री हस्तीमलजी, मर्यादा महोत्सव आयोजन समिति के संयोजक श्री शान्तिलालजी संकलेचा आदि ने गीत, वक्तव्य और कविता के द्वारा मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मुमुक्षु बहनों ने समूहगीत का संगान किया। टापरा के श्रद्धालुओं ने गीत के माध्यम से १४९ मर्यादा महोत्सवों की झांकी प्रस्तुत की। शैक्ष साध्वियों ने रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री हीरालाल मालू ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'यह भैक्षवगण कल्पवृक्ष के समान है, जो अपने सदस्यों की कितनी-कितनी अपेक्षाओं की संपूर्ति करता है। शासन कल्पवृक्ष की अपेक्षाएं हैं--उसे संस्काररूपी जल का चिंतन मिलता रहे। संघ में सारणा-वारणा का क्रम चलते रहना चाहिए। हर कार्य गुरुदृष्टि के अनुकूल होना चाहिए। शासन कल्पतरु के लिए वत्सलता की भी अपेक्षा होती है। इससे शासन कल्पतरु को सिंचन

मिलता है। शासन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वारणा जरूरी है। किसी भी गलत बात का यथौचित्य प्रतिकार होना चाहिए। मर्यादाओं के प्रति जागरूकता बनी रहनी चाहिए। आचार्य की आज्ञा के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव हो। हमारे साधु-साध्वियों में आज्ञा के प्रति कितना सम्मान और कितनी निष्ठा है। यह निष्ठा भावना संघ को सुदृढ़ और प्राणवान बनाती है।

साधु-साध्वियां ही नहीं, श्रावक समाज भी गुरुदृष्टि के प्रति जागरूक है। उसमें विनय और समर्पण का भाव है। आज्ञानिष्ठा में वे साधु-साध्वियों से पीछे नहीं हैं। शासन से उन्हें आश्वास और विश्वास मिलता है, उनकी सार-संभाल होती है। शासन कल्पतरु की सुरक्षा के प्रति सजग रहते हुए उसकी छत्रछाया में चित्तसमाधि और सुख-संतोष का अनुभव करें।'

पूज्यवर ने शैक्ष साध्वियों द्वारा प्रस्तुत परिसंवाद की सराहना की। आज रात्रिकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का 'बलिदानों की अमर कहानी' विषय पर प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने श्रावक समाज के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

उपहार और लोकार्पण

मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के प्रथम दो दिनों में उपहार और लोकार्पण का क्रम इस प्रकार रहा--

जैविभा द्वारा प्रकाशित आचार्यवर की कृति दुःखमुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय तथा संवाद भगवान से-२ का गुजराती अनुवाद जैविभाध्यक्ष श्री ताराचन्द रामपुरिया व श्री संतोष सुराणा ने आचार्यवर को भेंट किया। श्री विमल नाहटा ने आचार्यश्री महाश्रमण के व्यक्तित्व पर आधारित डाक्यूमेंट्री का गुजराती संस्करण लोकार्पित किया।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में आचार्य तुलसी के चयनित/संपादित प्रवचनों के विषय में समणी सत्यप्रज्ञाजी के वक्तव्य के पश्चात श्री सुखराज सेठिया ने प्रारंभिक चार प्रवचनों की डीवीडी लोकार्पित की। मुनि विजयकुमारजी की कृति 'सुनहरा बचपन' जैविभाध्यक्ष श्री ताराचन्द रामपुरिया ने भेंट की। मित्र परिषद के श्री प्रमोद नाहटा आदि ने तिथि दर्पण, तिथि पत्रक, प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री संजय धारीवाल तथा मंत्री श्री सलिल लोढ़ा ने स्प्रिच्युअल ट्रेनिंग प्रोग्राम का फोल्डर, क्षेत्रीय समन्वयक श्री गौतम डागा ने जैविभा मान्य विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित जीवनविज्ञान से संबद्ध पाठ्यपुस्तकों का तमिल अनुवाद, आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह के संयोजक श्री हीरालाल मालू ने आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में प्रकाशित कैलेण्डर तथा अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने भ्रूणहत्या रोकथाम से संबद्ध सामग्री पूज्यवर को उपहृत की। मुनि दर्शनकुमारजी ने अपनी हस्तनिर्मित कलाकृति भेंट की।

मर्यादा महोत्सव का मुख्य समारोह

१७ फरवरी, माघ शुक्ला सप्तमी। तेरापंथ के महाकुंभ मर्यादा महोत्सव का भव्य समायोजन। मध्याह्न १२.१५ बजे परमपूज्य आचार्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ। मुनि दिनेशकुमारजी ने मर्यादा घोष व मर्यादा गीत प्रस्तुत किया। समणीवृन्द, साध्वीवृन्द व मुनियों ने अलग-अलग गीतों का सुमधुर संगान किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'संघ के सदस्यों के लिए संघ त्राण है, शरण है और प्रेरणा है। साधना करने वाले व्यक्ति के लिए संघ की अपेक्षा रहती है। साधना की जो चमक संघ में होती है, वह अन्यत्र नहीं। आकाश में चमकते सितारे की तरह भैक्षव संघ में सब साधना कर रहे हैं। संघ में रहने वाले के लिए मर्यादा और अनुशासन की अनुपालना अनिवार्य है। जो साधक अपनी सीमा में रहकर साधना करते हैं, गुरुदृष्टि को सामने रखकर चलते हैं तथा जो श्रद्धा के धागे से बंधे रहते हैं, वे संघ में अपना

विकास करते हैं। शिष्य के समर्पण का तार गुरु के साथ जुड़ा रहना चाहिए। हमारे आचार्यों ने मर्यादा महोत्सव को आगे से आगे निखारने का प्रयास किया। ऐसे जीवंत धर्मसंघ का मिलना हमारा सौभाग्य है। हमारी संघनिष्ठा निरंतर पुष्ट और वृद्धिंगत होती रहे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ का मर्यादा महोत्सव विलक्षण है। यह महोत्सव संगठन, मर्यादा, अनुशासन और मूल्यों के प्रति आस्था का प्रतीक है। अनुस्रोतगामिता के इस युग में यह प्रतिस्रोतगामी धर्मसंघ है। नई-नई उम्मीदों को जगाने वाला और जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने वाला धर्मसंघ है। संघ का हर सदस्य चाहता है कि हमारे धर्मसंघ का विकास हो। इसके लिए जरूरी है--लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, विचारों की सुदृढ़ता, आचार की निर्मलता एवं अभिव्यक्ति की क्षमता। एक आचार्य, एक सामाचारी व तत्त्वनिरूपण की शैली--इस त्रिपदी के आधार पर आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की बुनियाद रखी। वे पराक्रमी पुरुष थे और उनके पास आचार का बल था, इसी कारण उन्होंने सफलता प्राप्त की। हम भाग्यशाली हैं कि उन्हीं के ग्यारहवें पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण का नेतृत्व हमें प्राप्त है। हमारा कर्तव्य है कि आचार्यवर के सपनों के अनुरूप अपने पुरुषार्थ के द्वारा हम संघ के विकास में अपनी आहुति देते रहें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का इस अवसर पर प्रेरक व मार्गदर्शक उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। मर्यादा, व्यवस्था व अनुशासन की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए आचार्यवर ने इस अवसर पर दो सौ दस वर्ष पूर्व लिखे गए मर्यादा पत्र का वाचन और विश्लेषण किया। मर्यादा महोत्सव के लिए विशेष रूप से रचित गीत का संगान करते हुए उसकी व्याख्या की। आचार्यवर ने साधु-साध्वियों, समण-समणियों, संस्था की मुमुक्षु बहनों व श्रावक समाज के लिए विशेष दिशा-निर्देश प्रदान किए। गीत व पूज्यवर का विशेष वक्तव्य पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है। आचार्यवर ने इस अवसर पर साधु-साध्वियों के चतुर्मास व समणी केन्द्रों/उपकेन्द्रों की घोषणाएं की। इसके पश्चात् बड़ी हाजरी का क्रम रहा, जिसमें साधु-साध्वियों व समणश्रेणी ने दीक्षाक्रम से पंक्तिबद्ध खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण करते हुए मर्यादा पालन के संकल्प को दोहराया। कार्यक्रम के समापन पर आचार्यवर ने मंगलपाठ सुनाया और सबने बद्धांजलि खड़े-खड़े संघगान का सामूहिक संगान किया। इसी के साथ त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव का मंगल समापन हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आगामी मर्यादा महोत्सव आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के अंतर्गत ६ फरवरी २०१४ को गंगाशहर में आयोजित होगा।

टापरा मर्यादा महोत्सव : कुछ उल्लेखनीय तथ्य

□ मर्यादा महोत्सव की शृंखला का यह १४९वां मर्यादा महोत्सव था, जिसमें ७८ साधुओं, १५९ साध्वियों, १ समण व ८८ समणियों की संभागिता रही। लगभग दस हजार भाई-बहनों की विशाल उपस्थिति में यह महोत्सव सानंद संपन्न हुआ। इसमें देश के विभिन्न प्रान्तों के लोग तो संभागी बने ही, सिवांची-मालाणी क्षेत्र के निवासी और प्रवासी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। अहमदाबाद, सूरत व दक्षिण भारत में प्रवास करने वाले इस संभाग के निवासियों ने जोश एवं गौरव की अनुभूति के साथ भाग लिया।

□ मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में इतर तेरापंथी लोगों ने भाग लेकर आज्ञानिष्ठा व अनुशासन को जीवंत रूप में देखा और उससे प्रभावित हुए। आचार्यप्रवर द्वारा घोषित चतुर्मासों और निर्देशों को साधु-साध्वियां जिस सहजता और विनम्रता से स्वीकार कर रहे थे, वह लोगों के लिए किसी विस्मय से कम नहीं था।

□ मर्यादा महोत्सव के अवसर पर पूज्य आचार्यवर द्वारा प्रदत्त उद्‌बोधन अत्यन्त मार्मिक, उत्प्रेरक, पथदर्शक, संपोषक और स्मरणीय था। इस उद्‌बोधन में परमपूज्यवर ने व्यवस्था की दृष्टि से कई क्रान्तिकारी निर्देश प्रदान किए।

□ मेगा हाइवे पर अवस्थित टापरा में मर्यादा महोत्सव हेतु पूज्यवर ने १ फरवरी को प्रवेश किया और १८ फरवरी को मध्याह्न में यहां से प्रस्थान किया। पूज्य आचार्यवर एवं संतों का प्रवास मुख्यतः तेरापंथ भवन में हुआ। साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास श्री छगनराज प्रेमराज पालगोता के मकान में हुआ। साध्वियों का प्रवास अलग-अलग अठारह मकानों में हुआ, जिसमें छह मकान पूरे खाली थे। समणीवृन्द का प्रवास आचार्य तुलसी विद्या भवन में हुआ।

□ टापरा कोई बड़ा नगर नहीं है। इस गांव में कहीं से कोई भी तीन मिनट में प्रवचन पंडाल में पहुंच सकता था। गांव के कई श्रद्धालुओं ने अपने मकानों को खाली कर कुटीरों में सेवा की और वे मकान साध्वियों के प्रवास हेतु उपलब्ध हो गए।

□ व्यस्तता के बावजूद परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सभी श्रद्धालु घरों का स्पर्श किया। गांव के ठाकुर परिवार के रावलों व अन्य घरों में भी पूज्यवर के चरण टिके। सभी श्रद्धालु परिवारों को निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का भी प्रायः सभी श्रद्धालुओं के घरों में पदार्पण हुआ।

□ परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के दौनिक प्रवचन, रात्रिकालीन कार्यक्रम व मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम 'जय मर्यादा समवसरण' में हुए। कई प्लॉटों को मिलाकर लगभग पचपन हजार वर्गफीट में यह पंडाल निर्मित हुआ था।

□ टापरा प्रवेश के साथ प्रायः सभी साधु-साध्वियों एवं समणश्रेणी की समवेत समुपस्थिति में आचार्यवर के विषयबद्ध प्रवचन हुए। प्रवचनोपरान्त चला जिज्ञासा-समाधान का क्रम बहुत प्रभावी रहा।

□ मर्यादा महोत्सव के अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति आचार्यवर की पावन सन्निधि में साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के सारणा-वारणा के उपक्रम चले। संगोष्ठी का प्रारंभ १८ जनवरी से हुआ। २४-२७ व ३० जनवरी को तथा ४ फरवरी को अनुशासन संहिता का वाचन हुआ। ७, १० व १३ फरवरी को भी सामूहिक संगोष्ठियां हुई, जिसमें आचार्यवर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। साध्वीप्रमुखाश्री के भी प्रसंगोपात वक्तव्य हुए। १२ फरवरी को समणियों की संगोष्ठी हुई। ये संगोष्ठियां असाडा व टापरा में चलीं।

□ टापरा प्रवेश के साथ पूरे गांव में थोड़े-थोड़े अन्तराल पर गीत अनुगुंजित होते रहते। इस आयोजन हेतु एक गीत तो 'टाइटल सांग' जैसा हो गया। उसकी कुछ पंक्तियां लोगों की जबान पर बैठ गई। वे पंक्तियां हैं--

हो कोई डेढ़ गली रो गांव, हो कोई लेवै टोकियो नाम।
पिण धण्यां निजर टिकगी, म्हे जीत गया सब दांव ।।
दुनिया रा सै लोगां देख्यो टापरो,
मोछव रो झंडो गाड्यो सांतरो।।

□ टापरा में लगे सभी बैनर्स की थीम प्रायः ब्ल्यू रंग में थी।

□ छोटा-सा गांव और इतना बड़ा कार्य। मर्यादा महोत्सव के समग्र प्रबंधन हेतु बाहर के लोगों की सेवा नहीं ली गई। मात्र अड़तालीस श्रद्धालु परिवारों के सदस्यों ने हर व्यवस्था में अपने समय व श्रम का नियोजन किया। दिन-रात सजग रहकर सारी व्यवस्थाओं को संभाला।

□ आवास व्यवस्था के सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार यात्रियों के लिए तेरापंथ नगर बसा, जिसमें २९० सिंगल रूम, २४ अटैच्ड व ४० हॉल सहित ३५४ कुटीर थे। इसके अतिरिक्त २०-३० किमी. की परिधि में स्थित असाडा, बालोतरा व जसोल के नए तेरापंथ भवनों, सिवांची-मालानी भवन, अन्य सामाजिक भवनों तथा नाकोड़ा व आसपास के यात्री भवनों में आगंतुकों की व्यवस्था की गई।

□ भोजनालय व्यवस्था के सूत्रों के अनुसार मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में लगभग चालीस

हजार लोगों ने कूपन लेकर भोजन किया। अन्य दिनों में लगभग तीस हजार लोगों ने भोजन व्यवस्था का लाभ लिया। भोजनालय लगभग अट्ठाईस हजार वर्गफीट में निर्मित था।

□ असाडा व टापरा में लगभग एक माह का प्रवास हुआ, जिसमें रात्रिकालीन कार्यक्रम में विषयबद्ध प्रवचन हुए। काव्यसंध्या, भजनसंध्या आदि अन्य कार्यक्रम भी आयोजित हुए। रात्रि में मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि अशोककुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (सर.), मुनि धर्मेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी, मुनि स्वस्तिककुमारजी, मुनि मुदितकुमारजी आदि के वक्तव्य हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रमों का संचालन मुनि पुलकितकुमारजी एवं मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने किया।

□ तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा एकदिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ। सुराना हॉस्पिटल व अन्य अस्पतालों से समागत डॉक्टरों की देखरेख में हड्डी रोग के ११६, फिजिशियन के १४२, ई.एन.टी. के ३३, नेत्ररोग के १७५ रोगियों की जांच की गई और निःशुल्क दवाएं वितरित की गईं। श्री बाबूलाल अशोक महेन्द्र वडेरा परिवार के सहयोग से आयोजित इस शिविर में आचार्य तुलसी चल चिकित्सालय (ए. टी.एम.) के मेडिकल स्टॉफ का भी योगदान रहा।

टापरा से गुजरात की ओर मंगल विहार

१८ फरवरी। प्रातः 'गण उपवन सरसाएं' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'हमारा धर्मसंघ अध्यात्म से संपृक्त धर्मसंघ है। पंचनिष्ठामृत से पूरित हों तो गण उपवन सरसाने में बाधा नहीं आती।' पूज्यवर ने पंचनिष्ठा--आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, आचारनिष्ठा व मर्यादानिष्ठा की विशद विवेचना की।

आचार्यवर ने आगे कहा--'परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने टापरा के लिए मर्यादा महोत्सव घोषित किया था, जिसे मैंने पूरा कर दिया। अब मैं हल्का हो गया हूं। आचार्यवर के द्वारा मेवाड़ में केलवा चतुर्मास व आमेट मर्यादा महोत्सव तथा मारवाड़ में जसोल चतुर्मास व टापरा मर्यादा महोत्सव स्वीकृत थे। वे सभी सानंद संपन्न हो गए। इसका मुझे सात्त्विक संतोष है। अब गुजरात की यात्रा अवशिष्ट है। वैसे आचार्यवर ने फरमाया था कि कच्छ की यात्रा या तो मैं करूंगा या फिर महाश्रमण करेंगे। उस यात्रा के लिए अब प्रस्थान होने वाला है।'

टापरा मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'टापरा में मर्यादा महोत्सव बहुत अच्छे रूप में संपन्न हुआ लगता है। पहले आशंका थी कि छोटा-सा गांव है, कहां ठहरेंगे? लेकिन आवास व भोजन से संबंधित कोई भी शिकायत मेरे ध्यान में नहीं आई। मुनि दिनेशकुमारजी टापरा के हैं। इन्होंने अपने पैतृक गांव में अच्छा दायित्व निभाया। ये गुरुकुलवास के योग्य व युवा संत हैं। मुनि जयकुमारजी भी इसी गांव के हैं। दोनों अग्रणी संत हैं। अच्छे व योग्य संतों के मिलने से कार्य सुगम हो जाता है। समणी अक्षयप्रज्ञाजी भी यहीं की हैं। इन्हें पहले ही बहनों के बीच काम करने को भेज दिया था। सबके सम्मिलित प्रयासों से यह बड़ा आयोजन सफल हुआ।'

मध्याह्न में लगभग १२.३० बजे आचार्यवर ने ससंघ तेरापंथ भवन से गुजरात की ओर विहार किया। आचार्यवर भवन के पास स्थित विद्यालय में पधारे और मर्यादा महोत्सव पर उपस्थित साधु-साध्वियों को अपेक्षित दिशा-निर्देश प्रदान किए। स्थानीय तेयुप व कुछ परिवारों को सेवा का अवसर प्रदान कर पूज्यवर ने प्रस्थान किया। लगभग साढ़े दस किमी. का विहार कर आचार्यवर कालवड़ी पधारे। यहां आपका रात्रिकालीन प्रवास राजकीय प्राथमिक विद्यालय में हुआ। धूप तेज थी, फिर भी बड़ी संख्या में भाई-बहन यात्रा में संभागी बने। छोटा-सा गांव टापरा मर्यादा महोत्सव का सफलतापूर्वक समायोजन कर तेरापंथ इतिहास का उल्लेखनीय क्षेत्र बन गया।

भरोसा नहीं इस नश्वर जीवन का

१६ फरवरी। आज १४ किमी. का विहार कर आचार्यवर 'लोहिडा' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में अयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए समय को गंवाना नहीं चाहिए। इस नश्वर जीवन का भरोसा नहीं करना चाहिए। बचपन, जवानी बुढ़ापा--किसी भी अवस्था में मौत दस्तक दे सकती है। शरीर और आत्मा का योग जीवन है। यह योग कब वियोग में परिणत हो जाए, कहना कठिन है। योग जन्म है, वियोग मरण है और आत्यन्तिक वियोग मोक्ष है। शरीर समाप्त होता है, पर आत्मा समाप्त नहीं होती, वह अविनश्वर है। मृत्यु त्रैकालिक नियम है, इसलिए प्रतिक्षण व्यक्ति को सजग रहना चाहिए और पाप-सेवन से बचने का प्रयास करना चाहिए।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मित्रता का शत्रु है स्वार्थ

२० फरवरी। प्रातः ६.०५ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर सिणधरी पधारे। स्थानीय मूर्तिपूजक जैन समाज पूज्यवर के पदार्पण से उल्लसित था। आचार्यप्रवर का प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी आत्मा ही हमारी मित्र अथवा शत्रु होती है। दुष्प्रवृत्तियों में लगी आत्मा शत्रु और सत्प्रवृत्तियों में लगी आत्मा मित्र होती है। बाहरी मित्रों में वास्तविक मित्रता कितनी होती है, यह विमर्शनीय प्रश्न है। विपत्ति में साथ निभाने वाला बाहरी दुनिया का सच्चा मित्र हो सकता है। 'कल्याणमित्र' शब्द बहुत अर्थवान शब्द है। जो कल्याण में सहायक बने, वह कल्याणमित्र होता है। आत्मोत्थान की अभ्रिपेरणा देना और उसमें सहायक बनना कल्याणमित्रता है।'

पूज्यवर ने युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दीक्षा दिवस पर श्रद्धापूर्वक उनका पावन स्मरण करते हुए जनता को त्याग, संयम व वैराग्य की दिशा में आगे बढ़ने हेतु उत्प्रेरित किया।

पायला में पावन पदार्पण

२१ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः सिणधरी से १५ किमी. दूर पायला की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती सुभाष पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को आचार्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। ठाकुर हरिसिंहजी के नेतृत्व में पायलावासियों ने आचार्यवर की भावभीनी अगवानी की। टापरा निवासी गोठी परिवार अपने आराध्य को अपने पैतृक गांव में पाकर प्रफुल्लित था। छोटे-से गांव में पूज्यवर के पदार्पण से हर्षोल्लास का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। यहां पूज्यप्रवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में गोठी परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री दिलीप गोठी, श्री भंवरलाल गोठी, श्री राणमल गोठी, संगीता गोठी एवं श्री मदनलाल ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। ठाकुर हरिसिंहजी ने संपूर्ण गांव की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया। मुनि जयकुमारजी ने अपने संसारपक्षीय गांव और मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपनी संसारपक्षीय ननिहाल में पूज्यवर की अभ्यर्थना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्राचीन साहित्य में चौरासी लाख जीव योनियों का उल्लेख मिलता है। विभिन्न योनियों में भ्रमण करती हुई आत्मा कभी-कभी मनुष्य जन्म को प्राप्त हो सकती है। मनुष्य योनि को महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि इसी जन्म से सिद्धत्व को प्राप्त किया जा सकता है। देवता भी मनुष्य गति में आए बिना मुक्ति को प्राप्त नहीं हो सकते। मनुष्य के पास अच्छा मस्तिष्क होता है। व्यक्ति को सत्कार्यों में उसका उपयोग करना चाहिए। व्यक्ति चिंतन करे कि इस दुर्लभ

मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए वह क्या कर रहा है? यदि जीवन में धार्मिकता है तो जीवन सार्थक बन सकता है। समय धन है, इसे व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत न करें, सोच-समझकर अच्छे कार्यों में नियोजित करने का प्रयास करें।'

प्रसंगवश पूज्य आचार्यवर ने कहा--'आज हम गुजरात की ओर बढ़ते हुए पायला आए हैं। यहां का गोठी परिवार धर्मसंघ से जुड़ा हुआ है। मुनि जयकुमारजी इसी परिवार से संबद्ध हैं। ये गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ रहे हुए अच्छे योग्य संत हैं। मुनि रोहितकुमारजी भी इसी परिवार से संबद्ध हैं। वे यहां नहीं आ सके। उन्होंने भी गुरुदेव महाप्रज्ञजी की बहुत सेवा की है। मुनि दिनेशकुमारजी को कुछ अंशों में यहां का माना जा सकता है। ये बहुत समझदार, रीति-नीति को जानने वाले संत हैं और अब प्रौढ़ संतों की श्रेणी में आ रहे हैं। मुनि कीर्तिकुमारजी का यहां संसारपक्षीय ननिहाल है। ये उदीयमान और बहुत कार्यकारी संत हैं। जैसा बताया गया, साध्वी मुकुलयशा और साध्वी मैत्रीयशा भी यहां से जुड़ी हुई हैं। सभी साधु-साध्वियां खूब अच्छी साधना और कार्य करते रहें।'

२२ फरवरी। श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः विहार से पूर्व पायला गांव के भीतर स्थित गोठी परिवार के घरों में पधारे। पूज्यवर का मंगल पदार्पण श्रद्धालुओं की प्रसन्नता को द्विगुणित करने वाला था। ठाकुर हरिसिंहजी का घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बना। विहार के दौरान सड़ा गांव के भीतर भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। असाडा निवासी श्री मांगीलाल भंसाली का परिवार अपनी पैतृक भूमि पर आचार्यवर का स्वागत कर आह्लादित था। पूज्यवर ने भंसाली परिवार के घर में कुछ क्षण विराजमान होकर ग्रामीणों को पावन संबोध प्रदान किया।

लगभग १०.०३ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर भाटाला पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में सात दिन पूर्व समणश्रेणी में दीक्षित समणी पीयूषप्रज्ञाजी व समणी मर्यादाप्रज्ञाजी ने परिसंवाद के माध्यम से अपने सप्तदिवसीय अनुभवों को प्रस्तुति दी। श्री राणमल भंसाली, श्री मांगीलाल भंसाली ने सड़ा पदार्पण के लिए पूज्यचरणों में कृतज्ञता व्यक्त की। भंसाली परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आर्ष संकल्पों के साथ नवदीक्षित समणीद्वय को बड़ी दीक्षा प्रदान की। पूज्यवर ने अपने प्रवचन में यथाशक्ति संयम को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए नवदीक्षित समणीद्वय को पावन संबोध प्रदान किया। आज मध्याह्न में बाड़मेर के पूर्व सांसद श्री मानवेन्द्रसिंह ने आचार्यवर के दर्शन कर पथदर्शन प्राप्त किया।

सुख प्राप्ति त्याग के द्वारा

२३ फरवरी। पूज्य आचार्यवर प्रातः भाटाला से १४ किमी. का विहार कर धांधलावास पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। अपने मंगलप्रवचन में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'प्राणियों के मन में दुःखमुक्ति की अभिलाषा रहती है। छोटे-छोटे प्राणियों को भी सुख प्रिय होता है। जन्म, मरण, बुढ़ापा, रोग आदि को दुःख कहा गया है। संसार में दुःख के साथ सुख भी है। सुख दो प्रकार का होता है--भौतिक और आध्यात्मिक। भौतिक सुख पदार्थ आदि से प्राप्त होता है, जबकि आध्यात्मिक सुख आत्मजनित होता है। त्याग-संयम की साधना के द्वारा व्यक्ति आध्यात्मिक सुख को प्राप्त कर सकता है।'

पूज्य आचार्यवर ने शुक्ला त्रयोदशी के अवसर पर हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को आचार और मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की। हाजरी वाचन के उपरान्त साधु-साध्वियों ने खड़े-खड़े लेखपत्र का उच्चारण किया।

सिवांची-मालानीस्तरीय मंगलभावना समारोह का आयोजन

२४ फरवरी। आज प्रातः साढ़े चौदह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर तहसील क्षेत्र गुढ़ामालानी पधारे। अहिंसा सर्कल से एक भव्य जुलूस के साथ पूज्यवर ने नगर-प्रवेश किया। यहां आपका प्रवास जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ धर्मशाला में हुआ।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में आयोजित सिवांची-मालाणी स्तरीय मंगलभावना समारोह में सिवांची-मालाणी भवन संस्थान के अध्यक्ष श्री पूनमचन्द चौपड़ा, टापरा प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री मोहनलाल संकलेचा, असाडा वर्धमान महोत्सव आयोजन समिति के महामंत्री श्री जवेरीलाल संकलेचा, जसोल चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़, बालोतरा के श्री घेवरचन्द गांधी मेहता, ने अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए।

गुड़ामालानी प्रवेश पर नगर की ओर से स्वागत अभिनंदन किया गया। नगर निवासी जोधपुर नगर निगम के कमिश्नर श्री ओ.पी.जैन, स्थानीय व्यापार मण्डल के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जैन ने आचार्यवर का स्वागत किया। पूर्व जिलाप्रमुख राणा भवानीसिंह ने कहा--'मैंने अपने सहपाठी मित्र दौलतराज सिंघवी के साथ जोधपुर में आचार्यश्री तुलसी के दर्शन किए थे, तभी से मैं अणुव्रत मिशन से परिचित हुआ।' एस. डी.एम.श्री शंकरलाल जैन ने भी अपने विचार रखे।

बाड़मेर-जैसलमेर क्षेत्र के सांसद श्री हरीश चौधरी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण ने इस क्षेत्र में जो संदेश दिया है, उससे अच्छा वातावरण बना है। अहिंसा के संदर्भ में सबको प्रेरणा मिली है।' बाड़मेर के विधायक श्री मेवाराम जैन ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण के तीन सौ चौदह दिवसीय इस क्षेत्र के प्रवास में गांव और ढाणियों में जागृति का अच्छा माहौल बना है। आपने नशामुक्ति और अणुव्रत का जो संदेश दिया है, उसके लिए मैं अपने क्षेत्र की जनता की ओर से, अपनी ओर से आभार प्रकट करता हूं। आचार्यश्री की शिक्षा के अनुरूप मानव कल्याण हेतु आगे बढ़ें, ये संस्कार सबमें प्रभावी बनें।'

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक व राजस्थान के राजस्व व जल संसाधन मंत्री श्री हेमाराम चौधरी ने अपने वक्तव्य में कहा--'गुड़ामालानी में आचार्यश्री के पदार्पण से हम धन्य हो गए। आप जैसे महापुरुष के चरण जहां भी पड़ते हैं, वह भूमि पावन हो जाती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी पूर्व में यहां पधारे थे। उस पदार्पण के उपलक्ष्य में यहां 'अहिंसा सर्कल' का निर्माण हुआ था। आपके पदार्पण को यादगार बनाने के लिए भी हम कोई न कोई उपक्रम करेंगे। आपकी दिव्य प्रेरणा हमारा मार्गदर्शन करेगी।'

स्वागत कार्यक्रम में पंचायत समिति के पूर्व प्रधान श्री गांगाराम चौधरी, डिप्टी एस.पी.श्री अर्जुनसिंह, तहसीलदार श्री सुनील कटेवा, थानाध्यक्ष श्री गौरव अमरावत आदि सरकारी अधिकारी उपस्थित थे। बालोतरा के तपस्वी श्री बाबूलाल ढेलड़िया ने पूज्यवर से इक्कीस की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन में संस्कारों का उन्नयन आवश्यक है। जीवन में अहिंसा के विकास हेतु अठारह पापों से बचने का प्रयास करें। त्याग, संयम व साधना के द्वारा जीवन को समीचीन बनाएं।' पूज्यवर ने आगे कहा--'आज हम गुड़ामालानी आए हैं। पहले यहां हम आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ आए थे और यहां महावीर जयंती का आयोजन हुआ था। उस समय गुरुदेव ने 'शान्ति का संदेश' गीत का निर्माण किया था और उसे यहां प्रस्तुति दी थी। अब सिवांची-मालाणी की यात्रा संपन्नता की ओर है। लंबे समय तक हम इस एरिया में रहे। यहां के लोगों में हमने अच्छी भक्ति-भावना देखी। लोगों ने अच्छा आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास किया। इस क्षेत्र के हमारे अनेक साधु-साध्वियां और समणियां हमारे साथ रहे। उनमें से कई अब भी साथ में हैं और कइयों को हमने टापरा से बिदा कर दिया। यह भूमि उर्वर है। इसका यह उर्वरापन बना रहे, यहां के अच्छे व्यक्ति सामने आते रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम में सिवांची-मालाणी के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। यहां स्थानीय मूर्तिपूजक समाज के अनेक घर हैं और तेरापंथी परिवार चार हैं। जोधपुर नगर निगम के कमिश्नर श्री ओ.पी.जैन का पूरा परिवार तेरापंथ के प्रति गहरी आस्था रखता है। आचार्यवर के पदार्पण से पूरे नगर में उत्साह और उल्लास का वातावरण बना।

विद्या से मिले नशामुक्ति, मृषामुक्ति व गुस्सामुक्ति

२५ फरवरी। प्रातः गुड़ामालाणी के श्रद्धालु घरों का पूज्यप्रवर ने स्पर्श किया। वहां से लगभग १२.०५ किमी. का विहार कर आचार्यवर पिपराली सियालों का डेर पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ।

विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में बंधन और मुक्ति दोनों हैं। मन बंधन व मोक्ष का कारण बन जाता है। पवित्र व अध्यात्मलीन मन मोक्ष का कारण बनता है, जबकि मलिन व विषयासक्त मन बंधन का हेतु बनता है। राग-द्वेष का बंधन शिथिल पड़ने पर जीव मोक्ष की ओर उन्मुख हो जाता है। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के अन्तर्गत कायोत्सर्ग का प्रयोग निरूपित किया। इसमें शरीर को शिथिल करने का निर्देश दिया जाता है। कायोत्सर्ग की बड़ी निष्पत्ति तब होती है, जब आत्मा व शरीर के पृथकत्व की अनुभूति होती है। शरीरगत ममता व आसक्ति से विलग होकर बंधन को ढीला किया जा सकता है।'

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'वह विद्या उपयोगी है, जो मुक्ति प्रदान करने वाली है। पूर्ण मुक्ति की बात तो अभी दूर है। विद्या से प्रेरणा मिले, जिससे नशामुक्ति मिल सके, मृषामुक्ति अर्थात झूठ से मुक्ति मिल सके और गुस्से से मुक्ति मिल सके। इस मुक्तित्रय से विद्यार्थी जीवन बेहतर बन सकता है। विद्यार्थियों को मृदु, शालीन, मैत्रीपूर्ण व विनयपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। बच्चे कलह व झगड़े से बचें। विद्यार्थियों में हंसवृत्ति पनपे, जिससे वे सद्गुणरूपी मोती को चुन सकें। इससे उनका जीवन महान व उन्नत बनेगा, वे अच्छे नागरिक बन सकेंगे। जीवन की बगिया कुछ ऐसे विकसित हो, जिसमें सद्गुणरूपी विविधरंगी पुष्पों की सुवास हो।'

अनुपालना, साधना व आराधना हो

२६ फरवरी। प्रातः १५.०५ किमी. का विहार कर आचार्यवर 'गांधव' पधारे। रामजी की गोल तक मेगा हाइवे तक यात्रा चली और अब राष्ट्रीय राजमार्ग नं.१५ पर यात्रा का प्रारंभ हुआ। गांधव में आचार्यवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हिंसा व अहिंसा के रूप में दो मार्ग हैं। हिंसा का मार्ग दुःख की ओर ले जाता है। दुःख हिंसा से समुत्पन्न होता है। यदि सुख अपेक्षित है तो व्यक्ति अहिंसा के पथ पर चले। जीवन में अहिंसा की अनुपालना हो, संयम की साधना हो और तप की आराधना होनी चाहिए। यह त्रिविधरूप धर्माराधना है। जब दूसरों का कटु व्यवहार हम नहीं चाहते तो ऐसा व्यवहार हम दूसरों के साथ क्यों करें?' आचार्यवर ने अहिंसा यात्रा के चार आयामों की विशद चर्चा की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

विशेष निर्देश साहित्य के संदर्भ में

साधु-साध्वियों तथा समणश्रेणी द्वारा अथवा उनके बारे में लिखित पुस्तक साहित्य समिति की स्वीकृति

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 2-3-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

के उपरान्त प्रकाश में आती है। साहित्य के संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं--

- आठ से अधिक पृष्ठों की सामग्री के प्रकाशन से पूर्व साहित्य समिति की लिखित स्वीकृति आवश्यक है। प्रतियोगिता हेतु निर्मित सामग्री के उपयोग के विषय में भी यही धारा ध्यातव्य है।
- आचार्य द्वारा निर्दिष्ट अथवा आचार्य द्वारा पूर्व स्वीकृत संकलित सामग्री ही स्वीकृत की जा सकेगी।
- क्षमापना पत्र में साधु-साध्वियों के फोटो, कार्यक्रमों के विशेष कार्ड, गृहस्थ द्वारा संकलित बुकलेट व स्टीकर आदि में प्रेरणास्रोत, समाकलक आदि के रूप में साधु-साध्वियों के नाम न हों।
- साधु-साध्वियों के नाम से मंत्रों के स्टीकर, सुभाषित वाक्यों का संकलन, पत्रों में व्यक्तिपरक परिशिष्ट व फोटुओं का प्रकाशन न किया जाए।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- चि. अंकित सह सौ. स्नेहा के शुभ विवाहोपलक्ष्य में शान्तिलाल, राजकुमार, दिनेशकुमार, मुदित चपलोत परिवार, आकोला (राजस्थान) कुर्ला (मुम्बई) द्वारा प्रदत्त।

५१००/- श्री तोलारामजी सामसुखा (सुपुत्र-स्व. श्री मेघराज सामसुखा, गंगाशहर) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र भंवरलाल, माणकचन्द, किरणचन्द, सुपौत्र जेठमल, भरतकुमार, पदम, भोजराज, प्रवीण, हर्ष सामसुखा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्री धनपतजी सुराणा (तारानगर-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जतनदेवी, सुपुत्र सचिन, हेमन्त एवं सुपौत्र हर्ष सुराणा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती मनोहरीदेवी आंचलिया (धर्मपत्नी-स्व. थानमलजी आंचलिया, गंगाशहर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू विनोद-स्नेहलता, पंकज-कुसुम, सुपौत्र रोशन, प्रवीण, अरिहन्त, सौरभ, हर्षित, सुपौत्री ममता, सुरभि, निधि आंचलिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- युवकरत्न शासनसेवी स्वर्गीय रणजीतमलजी भण्डारी (सुपुत्र-स्व. श्री जबरमलजी भण्डारी, जोधपुर) की ७वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा भण्डारी, सुपुत्र अशोक, विमल भण्डारी, दिल्ली द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री आसकरणजी डोसी (सुजानगढ़) की पुण्यस्मृति में डोसी परिवार, सुजानगढ़ (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

मुनि जसराजजी का अनशनपूर्वक स्वर्गवास

२८ फरवरी। छापर सेवाकेन्द्र में स्थित मुनि जसराजजी (भादरा) का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हो गया। उनके विषय में पूज्य आचार्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से अब हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री शान्तिलाल के. जैन, महावीर जनरल स्टोर, सर्राफा बाजार, पो. भुज-कच्छ-३७० ००१ (गुजरात)। फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**